

Ann: 3-3-3 (1)

भारत में राज्यों की राजनीति (State Politics in India)

लेखक

डॉ. वर्षा मिलिन सागोरकर

एम.ए., एम.फिल., पी-एच.डी.
शा. हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल

एवं

हरीश कुमार खत्री

एम.ए., इतिहास (मेरिट), राजनीतिशास्त्र

कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल

भारत में राज्यों की राजनीति (State Politics in India)

- प्रकाशक : कैलाश पुस्तक सदन
हमीदिया मार्ग, भोपाल - 462 001
फ़ोन : (0755) 2535366, 4256804.
email : kailashpustak@gmail.com
website : www.kpsbhopal.com
- मूल्य : 300/- रुपये
- ISBN : 978-93-89806-28-1
- लेज़र टाईप सेटिंग : ट्रांस लेज़र, भोपाल
- मुद्रक : वैल प्रिंट्स प्रा. लि., भोपाल
- संशोधित संस्करण : 2021

- All Rights Reserved. No Part of this Publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without prior written permission.
- Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, some errors might have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that the publisher or the author or printer of this book does not take any responsibility for the absolute accuracy of any information published and for any damage or loss of action caused to any one, of any kind in any manner arising therefrom.
- For binding mistakes, misprints or for missing pages, etc., the publisher's liability is limited to replacement within one month of purchase by similar edition.
- All disputes are subject to Bhopal jurisdiction only.

पाठ्यक्रम

- इकाई-I** राज्य की कार्यपालिका : राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्री परिषद।
State Executive : Governor, Chief Minister and Council of Ministers.
- इकाई-II** राज्य की व्यवस्थापिका : विधान सभा एवं विधान परिषद।
State Legislature : Vidhan Sabha and Vidhan Parishad.
- इकाई-III** राज्य की न्यायपालिका : उच्च न्यायालय एवं अधिनस्थ न्यायालय।
Judiciary : High court and Subordinate Courts.
- इकाई-IV** समस्या के क्षेत्र : 1. राज्य स्वायत्तता की बढ़ती माँग। 2. नये राज्यों के गठन की माँग। 3. भूमण्डलीकरण एवं गठबन्धन की राजनीति के युग में राज्य राजनीति। 4. अन्तर्राष्ट्रीय नदी जल विवाद। 5. भारत ने राज्य राजनीति को प्रभावित करने वाले कारक।
Problem Area : 1. Increasing Demand for state Autonomy. 2. Demand for the creation of new states. 3. State politics in the era of Globalization and coalition politics. 4. Inter state river water disputes. 5. Factors influencing state politics in India.
- इकाई-V** 1. अन्तर्राज्यीय परिषद। 2. राज्य योजना आयोग/नीति आयोग। 3. राज्य वित्त आयोग। 4. राज्य निर्वाचन आयोग। 5. भारत में राज्य राजनीति की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
1. Interstate council. 2. State planning commission/NITI AAYOG. 3. State finance commission. 4. State election commission. 5. Broad patterns of state politics in India.



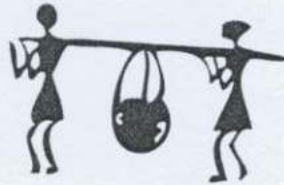
अध्याय

1. राज्य कार्यपालिका- राज्य (State Executive- Govern)
2. राज्य कार्यपालिका- मुख्य (State Executive- Chief A)
3. राज्य व्यवस्थापिका- विध (The State Legislative-Vi)
4. राज्य की न्यायपालिका- : (Judiciary : High Court)
5. केन्द्र-राज्य सम्बन्ध : विध (Centre-State Relations :)
6. राज्य स्वायत्तता की बढ़ती (Increasing Demand for :)
7. अन्तर्राज्यीय संबंध..... (Inter- State Relations)
8. राज्य की राजनीति को प्र (Factors Influencing Stat)
9. सरकारिया आयोग रिपोर्ट (Sarkaria Commission Re)
10. अन्तर्राज्यीय परिषद..... (Inter- State Council)
11. योजना आयोग/नीति आय (Planning Commission/NI)
12. राज्य निर्वाचन एवं वित्त 3 (State Election & Financ)
13. भारत में राज्य-राजनीति क (Patterns of State Politics)
14. मध्यप्रदेश की राजनीति में (Emerging Trends in Polit)

Ann : 3.3.3 (2)



जनजाति बैगा



डॉ. वर्षा सागोरकर



बालाजी लर्निंग बुक्स
भोपाल

जनजाति बैगा
डॉ. वर्षा सागोरकर

© डॉ. वर्षा सागोरकर, भोपाल, मोबाईल : 8319693538

प्रकाशक : बालाजी लर्निंग बुक्स
प्लेट नं.-6, संजय कॉम्प्लेक्स फेस-2, मातामंदिर,
भोपाल.
मोबाईल : 9826333677

संस्करण : प्रथम (आवृति), 2021

मूल्य : ₹ 280/-

कम्पोजिंग : बालाजी लर्निंग बुक्स, भोपाल.

मुद्रक : प्रकाश प्रिंटर्स, 5 प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल-11
फोन- 0755-2559593
मोबाईल : 9200555444

मध्यप्रदेश सदैव ही
जल्द जाये तो आदिवासी व
जल्द बिरसा मुंडा का नाम
जल्द में ही ब्रिटिशों के रि
क अलग पहचान देता है

साथ-साथ 1784
जिल्ला मांझी के आंदोलन
परतु आजादी के 73 वर्ष
लोगों की आर्थिक-सामाजि
है। एक ओर भारतीय सौ
किया जाता है वहीं दूसरो
दकर आरक्षण एक छल स

वैसे तो भारत में :
लोकसभा की 543 में से
अनुसूचित जनजाति के रि
की 3,961 सीटों में से :
जनजाति के लिए सुरक्षि
डालते हैं, लेकिन कैंडिडेट
चिंता का विषय है कि
विधायक बैगा जनजाति
जिला इनका गड हैं।

लोकसभा और
अनुसूचित जाति और

भारतीय संविधान

नवीन शिक्षा नीति के अनुसार सत्र 2021-22

पाठ्यक्रम : बी.ए. प्रथम वर्ष

राजनीति विज्ञान (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

लेखक

डॉ. अमरजीत कुमार सिंह

डॉ. उत्तम सिंह चौहान

डॉ. वर्षा सागोरकर

डॉ. नीरज सारवान

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

भारतीय संविधान : डॉ. सिंह, डॉ. चौहान, डॉ. सागोरकर, डॉ. सारवान
BHARTIYA SANVIDHAN : Dr. Singh, Dr. Chouhan, Dr. Sagorkar, Dr. Sarvan

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

ISBN - 978-93-94032-79-8

- प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,
भोपाल (म.प्र.) - 462-003
दूरभाष - (0755) 2553084, 276213
E-mail : mphga1970@gmail.com

संस्करण : प्रथम 2022

मूल्य : ₹ 150.00 (एक सौ पचास) मात्र

कम्पोजिंग : आर.एस. ग्राफिक्स एण्ड कम्प्यूटर, भोपाल

मुद्रक : वैल प्रिंट्स प्रा.लि., भोपाल

हिन्दी भाषा मानव
सुचितापूर्ण साधन का उप
जिज्ञासा एवं प्रश्नाकुलता
के विकास के कई युग औ
में गिनी जाती है तो इस
नमूने की उत्तराधिकारी
समर्थ है कि विश्व के
माध्यम से सुगमता से सम्प्रे
सिद्ध्य अर्जित न कर प
नातृभाषा के माध्यम से शिक्ष
अनावश्यक दबाव भी नहीं है

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ
सिद्ध उदाहरण है। चूंकि
हती है, इसलिए उसके मा
सरकार ने इसी के मद्देनजर
अध्ययन-अध्यापन को सुगम
लिए अकादमियों की स्थाप
मध्यप्रदेश शासन ने वर्ष 19
कर रहे विद्यार्थियों की सुवि
कर रही है। हिन्दी का स
इन्हें मेरी मान्यता है कि :
की निरंतरता बनी रहनी चाहिए

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ
उच्च शिक्षा के क्षेत्र में माध्यम
योजना के अंतर्गत विश्वविद्या
साथ प्रतियोगी परीक्षाओं में ब
के प्रकाशन का कार्य कर रही

मेरी अभिलाषा है कि
मध्य के कार्य में प्रदेश के
विद्यार्थियों के बीच इनके उ
विद्यार्थी इन्हें अपने अध्ययन क

Foundation Course

English Language

&

Literary Heritage of India

Foundation Course (English Language)

B.A./B.Sc./B.Com./B.HSc.-I/

B.A.(Mgt.)/ B.C.A. Part-I

Chief Editor

Dr. Gyan Singh Gautam

Professor and Head, Dept. of English
Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal

Editors

Dr. Shubhra Tripathi

Professor and Head, Dept. of English
Govt. M.V.M., Bhopal

Dr. Vinita Singh Chaudhary

Professor of English, Govt. Hamidia Arts & Commerce College
Bhopal

Dr. Indra Javed

Associate Professor
Sarojini Naidu Govt. P.G. Girls' College, Bhopal



Madhya Pradesh Hindi Granth Academy

ENGLISH LANGUAGE & LITERARY HERITAGE OF INDIA

C.E. : Dr. Gyan Singh Gautam

© Madhya Pradesh Hindi Grant Academy

- प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakur Marg, Bhopal- 462 0032
Bhopal- 462 0032 (M.P.)
Tel.: 0755-2553084, 2762123
E-mail : mphga1970@gmail.com

Edition : Six 2021

Price : ₹ 50.00 (Fifty) only

Composing : Akshar Graphics, Mob.: 9425409321

Printer : Pragati Printers, 28 Jail Road, Jehangirabad,
Bhopal

ENGLISH GRAMMAR

for

HIGHER STUDIES AND COMPETITIVE EXAMINATIONS

Authors

Dr. Neeraj Agnihotri
Professor and Head
Department of English
Institute for Excellence in
Higher Education
Bhopal

Dr. Vikas Jaolkar
Professor and Head
Department of English
Govt. Hamidia Arts &
Commerce College,
Bhopal

Dr. V. K. Jain
Professor
Department of English
M.L.C. Govt. Girls
P.G. College, Khandwa

Dr. Vinita Singh Chawdhry
Professor
Department of English
Govt. Hamidia Arts &
Commerce College, Bhopal



MADHYA PRADESH HINDI GRANTH ACADEMY

English Grammar

Writers : Dr. Agnihotri, Dr. Jaoolkar, Dr. Jain, Dr. Chawdhry

© - **Madhya Pradesh Hindi Granth Academy**

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindrathakur Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084

Edition : Eight 2021

Price : ₹ 130/- (One Hundred Thirty) only

Composing : Akshar Graphics,

Printer : Neo Printers, Govindpura, Bhopal

साधन
प्रस्ताव
और पर
कारण
जन-बो
अनुसंध
शिक्षावि
पर माध
शिक्षार्थ
उदाहर
उसके
के साथ
मे, प्र
प्रवर्तित
शिक्षा
उपलभ
मेरी मा
रहनी
शिक्षा
अंतर्गत
में बैठ
कार्य
इनके
साथी

6

AN ANTHOLOGY OF ENGLISH LITERATURE

(B.A. III Year)

Editors

Dr Neeraj Agnihotri
Professor and Head
Dept. of English
Govt MVM, Bhopal

Dr Vinay K Jain
Professor and Head
Dept. of English
MLC Govt. Girls College
Khandwa

Dr Vinita Singh Chawdhry

Professor, Dept of English
Govt Hamidia Arts and Commerce College, Bhopal



Madhya Pradesh Hindi Granth Academy

AN ANTHOLOGY OF ENGLISH LITERATURE

Editors- Agnihotri, Jain, Chawdhry

© **Madhya Pradesh Hindi Granth Academy**

Printed on the paper supplied on concessional rate by Govt. of India

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakur Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084

Edition : First 2021

Price : ₹ 110.00 (One Hundred Ten) only

Composing : Akshar Graphics, New Market, Bhopal

Printer : Mania Printers, New Ashoka Garden, Bhopal

AN ANTHOLOGY OF ENGLISH LITERATURE

(Based on New Unified Course for B.A. First Year Annual System)

Editors

Dr. Neeraj Agnihotri
Professor and Head
Dept. of English
Govt MVM, Bhopal.

Dr. Vinay Jain
Professor and Head,
Dept. of English, Govt MLC,
Girls P.G. College, Khandwa.

Dr. Vinita Singh Chawdhry

Professor, Dept. of English,
Govt. Hamidia Arts and Commerce College,
Bhopal.



MADHYA PRADESH HINDI GRANTH ACADEMY

An Anthology of English Literature

Editor : Dr, Agnihotri, Dr. Vinay Jain, Dr. (Smt.) Chawdhry

© **Madhya Pradesh Hindi Granth Academy**

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakor Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084
E-mail-mphga1970@gmail.com

Edition : Third 2021

Price : 80.00 (Eighty) Only

Composing: Akshar Graphics, Ph.: 9425409321

Printer : Pragati Printers, 28 Jail Road,
Jehangirabad, Bhopal

8

English Language and Indian Culture

Foundation Course (English)
First Year

Authors

Dr. Vinay Jain
Professor,
Govt. Girls College, Khandwa

Dr. Vinita Singh Chawdhry
Professor,
Govt. Hamidia College, Bhopal

Dr. Mamta Trivedi
Asstt. Professor,
Lokmanya Tilak College, Ujjain



Madhya Pradesh Hindi Granth Academy

ENGLISH LANGUAGE AND INDIAN CULTURE

Authors- Dr. Jain, Dr. Chawdhry, Dr. Trivedi

© **Madhya Pradesh Hindi Granth Academy**

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakur Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084

Edition : First, 2022

Price : ₹ 45.00

Composing: Akshar Graphics, New Market, Bhopal

Printer : Radhika Prakashan Pvt. Ltd. M.P. Nagar,
Zone-I, Bhopal. Tel.: 0755-4026506



वैज्ञानिक
शिक्षा मंत्र



मध्यप्र



9 789394 032040



वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

आधुनिक हिन्दी व्यंग्य निबंध-लेखन
और
शरद जोशी का साहित्य



डॉ. श्रीमती ज्योति धनोतिया

आधुनिक हिन्दी व्यंग्य निबंध-लेखन
और
शरद जोशी का साहित्य

लेखक

डॉ. श्रीमती ज्योति धनोतिया

सह-प्राध्यापक, हिन्दी

शासकीय हमीदिया कला एवं

वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

भोपाल (म.प्र.) 462001



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,

दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 09990236819

ईमेल: jtspublications@gmail.com



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

शैक्षणिक धरोहरनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित सम्पन्न सम्पत्तियों का संपूर्ण यथित स्वयं लेखक का है। प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

आधुनिक हिन्दी व्यंग्य निबंध-लेखन

और

शरद जोशी का साहित्य

लेखक

डॉ. श्रीमती ज्योति धनोतिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१

ISBN 978-93-92611-42-1

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

संतोषी कम्प्यूटर्स, दिल्ली

प्रकाशन

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

बी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ६६६०२३६८६९६

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रुपये

आवरण : रानीव कुमार वर्मा, दिल्ली

मुद्रक : कपीस प्रिंटिंग, दिल्ली

सादर स्नेहित समर्पण।

पूज्य पिताजी श्री रामचन्द्रजी पोरवाल,

पूजनीया माताजी श्रीमती कमलावती पोरवाल,

पूज्य ससुर स्वर्गीय श्री रामचन्द्रजी धनोतिया,

पूजनीया सासुर्माँ स्वर्गीया श्रीमती जानकी धनोतिया,

आदरणीय श्री अशोक धनोतिया एवं

दोनों प्यारी बेटियों कु. सौम्या, कु. दिशा को।

डॉ. श्रीमती ज्योति धनोतिया

महान शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों,
महापुरुषों व दार्शनिकों का भारत के
विकास में महत्वपूर्ण अवदान



संपादक मंडल

तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद





जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

शैक्षणिक वेतानवनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रसारण-घोटवशील, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

मूल्य शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों, महापुरुषों व शोधार्थियों का भारत के विकास में महत्वपूर्ण अवदान

रघुवर मंडल

शिक्षा सचिव

केंद्रीय सांख्यिकी विभाग, गुवाहाटी

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण : २०२२

ISBN 978-93-92611-59-9

प्रकाशक

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

बी-508, गली नं०17, विजय पार्क, दिल्ली-110053

दूरभाष : 08527 460252, 099990236819

E-Mail : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस

ए-9, नवीन इनक्लेव गांधीयाबाद,

उदयपुरा, पिन-201102

मूल्य : ₹२५०.०० रुपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

शुभकामना सन्देश



मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय रायदाबाद के शिक्षा संचायक "महान शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों, महापुरुषों व शोधार्थियों का भारत के विकास में महत्वपूर्ण अवदान" विषय पर संकलित पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों से आने वाले शोधार्थियों द्वारा अपने आलेख प्रकाशित होंगे जो शोध कार्यों को विश्व पर ले जाने का कार्य करेंगे।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु मैं सम्पूर्ण संपादक मंडल डॉ नम्रता जैन, डॉ रजनीका जैन, डॉ संजय मेहरोत्रा, डॉ रमेश कुमार जैन, विनय कुमार धर्मेश सिंह, दीपक मलिक, गजिया सुल्तान, पायल शर्मा आदि को हृदय से आभारवाहक प्रदान करता हूँ और साथ ही इस विषय पर सफलता पूर्वक पुस्तक प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

Sankar...

सुरेश जैन

कुलाधिपति

तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय मुयादाबाद

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का साहित्यिक अवदान

डॉ. ज्योति धनोतिया
सह प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
भोपाल (म. प्र.)

भारतेन्दु अपने युग के निर्माता और समकालीन साहित्य के लिए एक अप्रतिम उत्सर्ग और आदर्श हैं। देश काल की सीमा से परे उनका साहित्य सचमुच साहित्य के द्वारा मनुष्य को जानने, देश के चरित्र और संस्कृति की पहचान करने- कराने का माध्यम है और अपने रूप-कर्म, उद्देश्य और मूल्यों में, संपर्क और संकल्प में समकालीन लेखकों के लिए एक चुनौती है। यही कारण है कि उनकी प्रासंगिकता आज भी है। आपने केवल 15 वर्ष की वय में रचना प्रारंभ कर दी थी। केवल वर्ष के संपूर्ण रचना काल में उन्होंने हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग की सुर नींव स्थापित की। काव्य में उनकी भाषा ब्रज थी, पर गद्य खड़ी बोली में लिखा।

उन्होंने हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा को केवल साहित्य के लिए नहीं लिया, बल्कि एक संपूर्ण आंदोलन के लिए, नवजागरण के लिए लिया। भारतेन्दु के लिए साहित्य सोदेश्य और एक पूरा आंदोलन था- स्वाधीनता आंदोलन, भाषा आंदोलन, सांस्कृतिक आंदोलन, सामाजिक- धार्मिक आंदोलन, रामंच आंदोलन।

भारतेन्दु ने भाषा के शक्तिशाली और प्रेरक रूप को पहचाना ही नहीं बल्कि स्पष्ट रूप कि- 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल'। भाषा की उन्नति को राष्ट्रीय उन्नति का पूरा मानने वाले प्रथम साहित्यकार भारतेन्दु ही कहे गए हैं। भारतेन्दु ने खड़ी बोली हिन्दी को स्पष्ट नया व्यक्तित्व और उसका निजी अस्तित्व प्रदान किया। पत्रकारिता को राष्ट्रीय उत्थान और सामाजिक- राजनैतिक चेतना का माध्यम मानते हुए उन्होंने कवि- वचन- सुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन, बालबोधिनी पत्रिका निकाली जो भारतेन्दु-युग का दर्पण कही जा सकती है।

बालमुकुंद गुप्त ने उनके लेखन को तेज, तीखा, बेधड़क लेखन कहा और डॉ. रामविलास शर्मा ने उन्हें हिन्दी नवजागरण और प्रगतिशील चेतना से जोड़ा।

भारतेन्दु जी ने एक और छुआछूत, विधवा- विवाह, अनमेल विवाह, नारी- व्यक्तित्व आदि विषय पर खूबकर लिखा। इतना उन्मुक्त व्यक्तित्व लेकर भारतेन्दु ने साहित्य क्षेत्र में जो भी कार्य किए वह बहुत कम समय में बहुत अधिक था। उन्होंने न केवल स्वयं रचना की, अपना एक लेख

महान शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों, महापुरुषों व दार्शनिकों का भारत के विकास ... 93
मंडल भी तेगार किया, जिसमें बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, बंटीनारायण 'प्रेमचंद', श्रीनिवास दास, राधाचरण गोस्वामी आदि थे। भारतेन्दु स्वयं लेखन और अनुवाद में जुटते थे और उनका मंडल भी निरंतर इस कार्य में संलग्न था।

इनके निबंध सोदेश्य हैं- ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, यात्रा- परक, हास्य- व्यंग्यात्मक, जीवन- चारितात्मक, साहित्यिक, कला संबंधी आदि निबंधों में उनकी सुविचारित दृष्टि व्यक्त हुई है। भारतेन्दु ने हिन्दी गद्य की कई विधाओं में से आलोचना की भी नींव डाली। उनका निबंध 'नाटक' एक प्रकार से नाट्य क्षेत्र में हिन्दी- आलोचना का महत्वपूर्ण दस्तावेज कहा जा सकता है।

नाटक सम्राट भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने न केवल नाटक को युगीन समस्याओं, राजनैतिक- सामाजिक स्थितियों, राष्ट्रीय- चेतना, जन- जागृति और मनुष्य की संवेदना से जोड़ा बल्कि नाटक और रामंच के परस्पर संबंध और अनिवार्यता को समझते हुए नाट्य रचना भी की और रामकर्म भी किया। उन्होंने प्रचुर नाट्य- साहित्य की रचना की, जो मौलिक भी है और अनुदित भी। भारतेन्दु की राष्ट्रीय भावना के दर्शन उनकी रचनाओं में सर्वत्र होते हैं। 'भारत- दुर्दशा' में व्यक्त उनकी भावनाओं और विचारों को देखा जा सकता है-

"ये धन विदेश चलि जात इहै अति खारी।

ताहूपे महंगी काल रोग विस्तारि।।

दिन- दिन दुने दुख ईस देत हा ! हा ! शी।

सब के उपर टिकस की आफत आई।।

हा ! हा ! भारत- दुर्दशा न देखी जाई"।।

इसी प्रकार भारतेन्दुजी ने मुकरियों के द्वारा भी अंग्रेजी सत्ता का घोर विरोध किया है-

'भीतर- भीतर सब रस चूसै, हँसी- हँसी के तन- मन मूसै।

जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन नहीं अंग्रेज'।।

'चूरन जबसे हिंद में आया।

इसका धन- बल सभी घटाया।।

चूरन साहेब लोग जो खाता।

सारा हिंद हजम कर जाता'।।

ये कृतियाँ केवल ब्रिटिश शासक तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि आज की व्यवस्था पर भी सटीक बंती हैं। रिश्तखोरी आज भारत की सबसे बड़ी समस्या है। भारतेन्दुजी लिखते हैं-

'चूरन अमले सब जो खावै। दूनी रिश्त तुरत पचावै'।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी के पुरोधा एवं बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी भारतेन्दु, जो जीवन के मात्र 35 बसंत जिए, के लिए साहित्य सोद्देश्य था। पूरा जीवन हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी भाषा के लिए लगा दिया। उनके द्वारा किया गया साहित्य-कर्म सदैव हमारे पथ को आलोकित करता रहेगा। मां सरस्वती के इसे पुत्र को शत् - शत् नमन।

संदर्भ - ग्रंथ

1. अंधेर-नगरी- 'भारतेन्दु के व्यक्तित्व के सर्जनात्मक बिंदु' संपादक- गिरीश रस्तोगी, पृष्ठ 9,13,33,45,44,24, प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, 1, बी, नेताजी सुभाष नगर, नई दिल्ली-110002, संस्करण- द्वितीय 1992
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. दर्श- दिशा- शोध पत्रिका, अंक पाँचवाँ, मई 2016 संपादक डॉ. रामेश्वर तिवारी, डॉ. ज्योति धनोतिया

प्रयोजनमूलक हिन्दी: कार्यालयी प्रयोग

डॉ. गणेश लाल जैन, डॉ. रचना तैलंग, डॉ. आरती श्रीवास्तव, डॉ. जुझार लाल आर्य

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

ISBN - 978-93-94032-24-8

प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों के निर्माण की, भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) की केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा,
भोपाल (म.प्र.) 462 003
दूरभाष (0755) 2553084
फैक्स (0755) 2762123

संस्करण : प्रथम 2022

मूल्य : 90.00 (नब्बे रुपये मात्र)

कंपोजिंग : बालाजी ग्राफिक्स, भोपाल.

मुद्रक : वर्मा इण्डस्ट्रीज, अशोका गार्डन, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 9229203459

Rachna Tailang

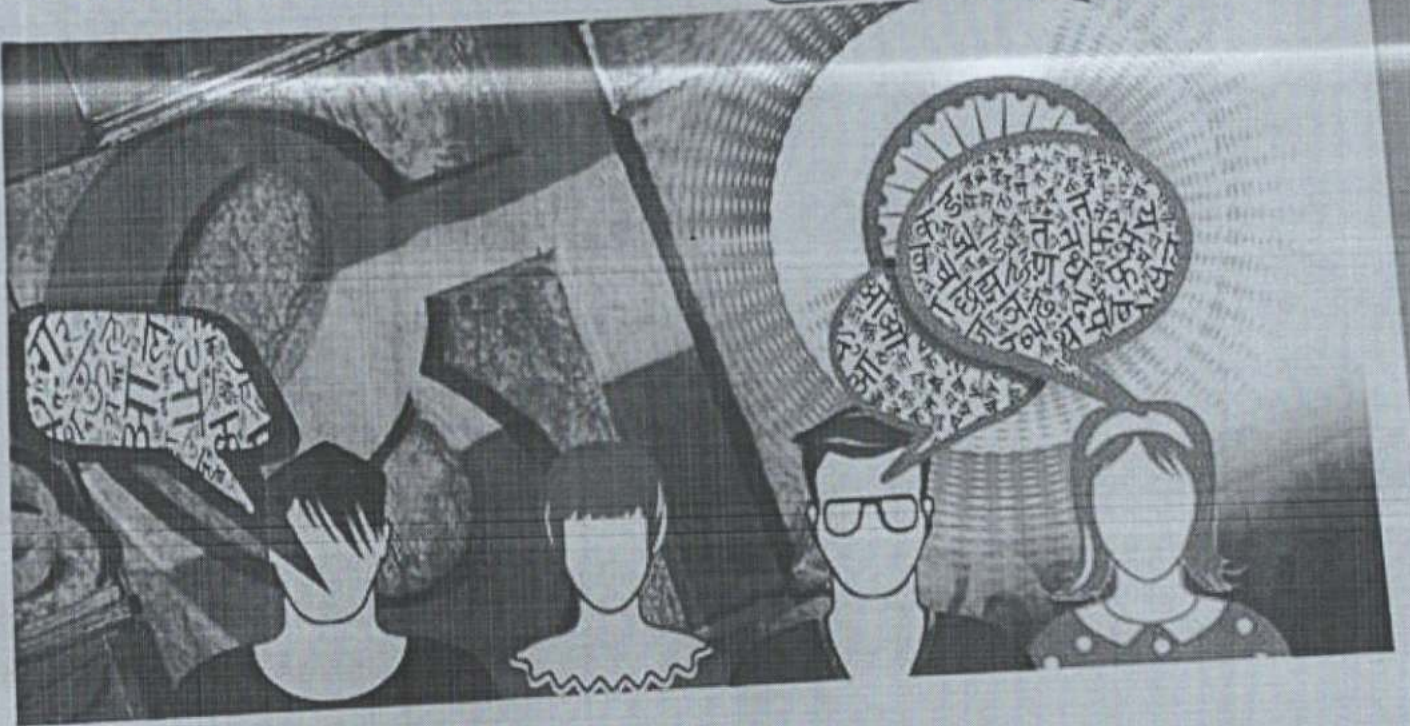


Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal
(Established under an Act of State Assembly in 1991)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल



स्व-अधिगम पाठ्य सामग्री



बी.ए. / बी.एस.सी. / बी.कॉम, प्रथम वर्ष
आधार पाठ्यक्रम, प्रथम प्रश्नपत्र

हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य

बी.ए./बी.एस.सी/बी.कॉम, प्रथम वर्ष
आधार पाठ्यक्रम, प्रथम प्रश्नपत्र

हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य



मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय – भोपाल
MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY - BHOPAL

Reviewer Committee

1. Dr Dharmendra Pare
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

2. Dr Anjali Singh
Professor
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

3. Dr Rachna Tailang
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

Advisory Committee

1. Dr Jayant Sonwalkar
Hon'ble Vice Chancellor
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

2. Dr L.S. Solanki
Registrar
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

4. Dr Dharmendra Pare
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

5. Dr Rachna Tailang
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

3. Dr Anjali Singh
Professor
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

COURSE WRITERS

Dr Snehlata Gupta, Associate Professor, Ginni Devi Modi Girls PG College, Modinagar (UP)

Units (2.0-2.1, 2.2-2.2.1, 2.3.1, 2.4.3-2.4.5, 2.5-2.9, 3.0-3.1, 3.2.1, 3.3.1, 3.4.1, 3.6-3.10, 4.0-4.1, 4.2.1, 4.3.1, 4.5-4.9, 5.0-5.1, 5.3.1, 5.4.1, 5.5.1, 5.6-5.10, 2.2.2-2.2.4, 2.3, 2.3.2-2.3.4, 3.2, 3.2.2-3.2.4, 3.3, 3.3.2-3.3.4, 3.4, 3.4.2-2.4.3, 4.2, 4.2.2-4.2.4, 4.3.4, 5.2, 5.2.2-5.2.4, 5.3, 5.3.2-5.3.4, 5.4, 5.4.2-5.4.4, 5.5, 5.5.2-5.5.4)

Dr. Ashutosh Kumar Mishra, Assistant Professor, Department of Hindi, Dr. Hari Singh Gaur Vishwavidhyalaya (MP)

Dr. Amrendra Tripathi, Associate Professor, Department of Hindi, Mahatma Gandhi Central University, Bihar
Units (1.0-1.1, 1.2, 1.3, 1.4.3, 1.5-1.9, 2.4-2.4.2)

Dr Urvija Sharma, Associate Professor, Department of Hindi, SD PG College, Ghaziabad
Units (1.4-1.4.2, 3.5, 4.4)

Copyright © Reserved, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

All rights reserved. No part of this publication which is material protected by this copyright notice hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the Registrar, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal.

Information contained in this book has been published by VIKAS® Publishing House Pvt. Ltd. and has been obtained by its Authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal, Publisher and its Authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for use of this information.

Published by Registrar, MP Bhoj (Open) U.

बी.ए./बी.एस.सी./बी.कॉम, प्रथम वर्ष
आधार पाठ्यक्रम, प्रथम प्रश्नपत्र

हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य



Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal
(Established under an Act of Parliament in 1991)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय,

Kolar Road, Near Swarn Jayanti Park, Yashoda Vihar Colony,
Chuna Bhatti Bhopal, Madhya Pradesh-462016

ISBN 978-93-89912-07-4



9 789389 912074

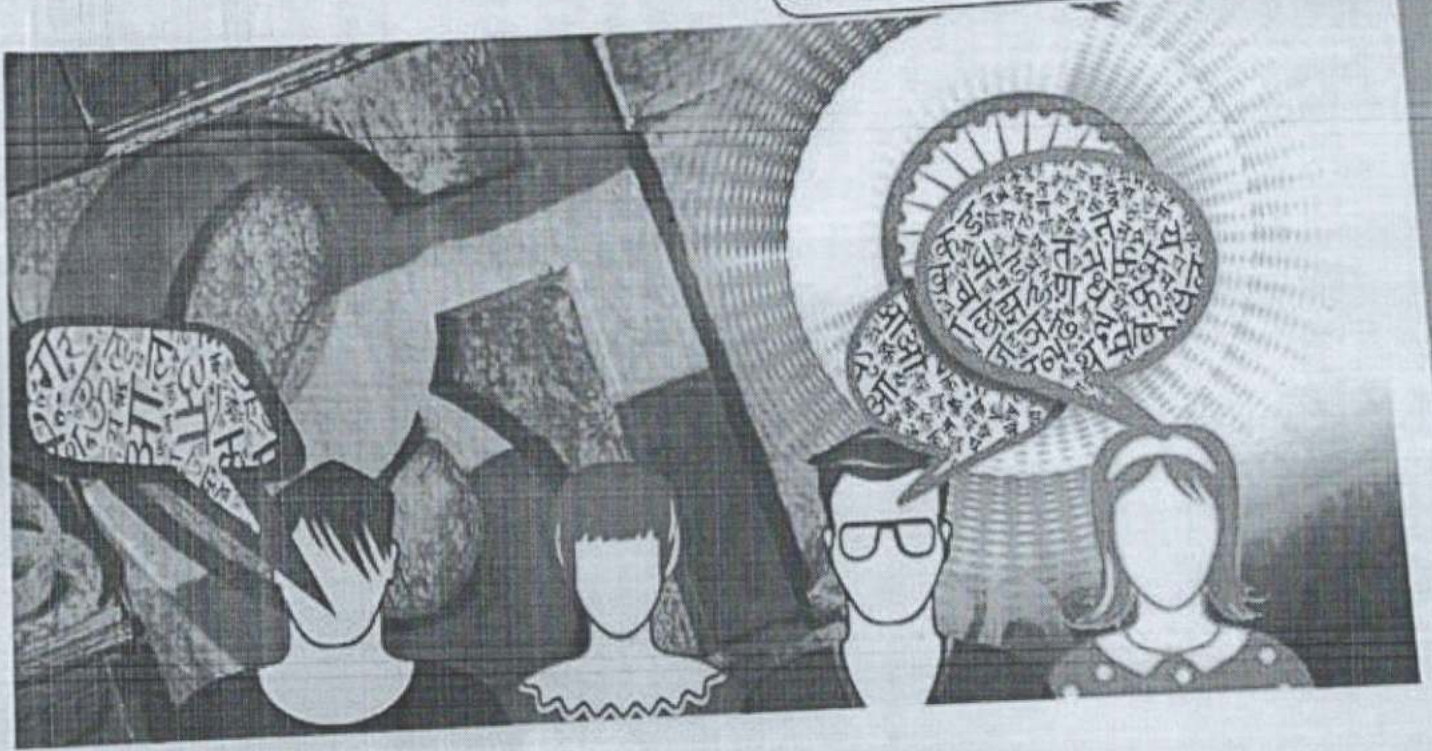


Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal
(Established under an Act of State Assembly in 1991)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल



स्व-अधिगम पाठ्य सामग्री



बी.ए. / बी.एस.सी. / बी.कॉम, प्रथम वर्ष
आधार पाठ्यक्रम, प्रथम प्रश्नपत्र

हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य

बी.ए./बी.एस.सी/बी.कॉम, प्रथम वर्ष
आधार पाठ्यक्रम, प्रथम प्रश्नपत्र

हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य



मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय – भोपाल
MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY - BHOPAL

Reviewer Committee

1. Dr Dharmendra Pare
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

2. Dr Anjali Singh
Professor
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

3. Dr Rachna Tailang
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

Advisory Committee

1. Dr Jayant Sonwalkar
Hon'ble Vice Chancellor
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

2. Dr L.S. Solanki
Registrar
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

3. Dr Anjali Singh
Professor
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

4. Dr Dharmendra Pare
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

5. Dr Rachna Tailang
Professor
Govt Hamidia College, Bhopal

COURSE WRITERS

Dr Snehlata Gupta, Associate Professor, Ginni Devi Modi Girls PG College, Modinagar (UP)

Units (2.0-2.1, 2.2-2.2.1, 2.3.1, 2.4.3-2.4.5, 2.5-2.9, 3.0-3.1, 3.2.1, 3.3.1, 3.4.1, 3.6-3.10, 4.0-4.1, 4.2.1, 4.3.1, 4.5-4.9, 5.0-5.1.5, 5.3.1, 5.4.1, 5.5.1, 5.6-5.10, 2.2.2-2.2.4, 2.3, 2.3.2-2.3.4, 3.2, 3.2.2-3.2.4, 3.3, 3.3.2-3.3.4, 3.4, 3.4.2-2.4.3, 4.2, 4.2.2-4.2.4, 4.3.4, 4.3.4, 5.2, 5.2.2-5.2.4, 5.3, 5.3.2-5.3.4, 5.4, 5.4.2-5.4.4, 5.5, 5.5.2-5.5.4)

Dr. Ashutosh Kumar Mishra, Assistant Professor, Department of Hindi, Dr. Hari Singh Gaur Vishwavidhyalaya (MP)

Dr. Amrendra Tripathi, Associate Professor, Department of Hindi, Mahatma Gandhi Central University, Bihar
Units (1.0-1.1, 1.2, 1.3, 1.4.3, 1.5-1.9, 2.4-2.4.2)

Dr Urvija Sharma, Associate Professor, Department of Hindi, SD PG College, Ghaziabad
Units (1.4-1.4.2, 3.5, 4.4)

Copyright © Reserved, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

All rights reserved. No part of this publication which is material protected by this copyright notice hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the Registrar, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal.

Information contained in this book has been published by VIKAS® Publishing House Pvt. Ltd. and has been obtained by its Authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal, Publisher and its Authors and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.

Published by Registrar, MP Bhoj (Open) University, Bhopal

सु ति ३ ले (११)

१.१.३

कगलिदास

का जीव जगत और पर्यावरण



डॉ. एच. आर. रैदास

विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग

शा. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

डॉ. सिद्धार्थ सोमकुवर

अतिथि व्याख्याता, संस्कृत

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

कालिदास का जीव जगत और पर्यावरण

लेखक

डॉ. एच. आर. रैदास

विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग

शा. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

डॉ. सिद्धार्थ सोमकुवर

अतिथि व्याख्याता, संस्कृत

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

ISBN : 978-93-92370-59-5

कालिदास का जीव जगत और पर्यावरण

डॉ. एच. आर. रैदास

डॉ. सिद्धार्थ सोमकुवर

सर्वाधिकार

डॉ. एच.आर. रैदास एवं डॉ. सिद्धार्थ सोमकुवर

प्रकाशक : संदर्भ प्रकाशन, भोपाल

जे-154, हर्षवर्धन नगर, भोपाल

मो. 9424469015

संस्करण : प्रथम 2022

मूल्य : रूपये 250 /-

पेज संख्या : 132

आकल्पन : डॉ. सचिन अवस्थी

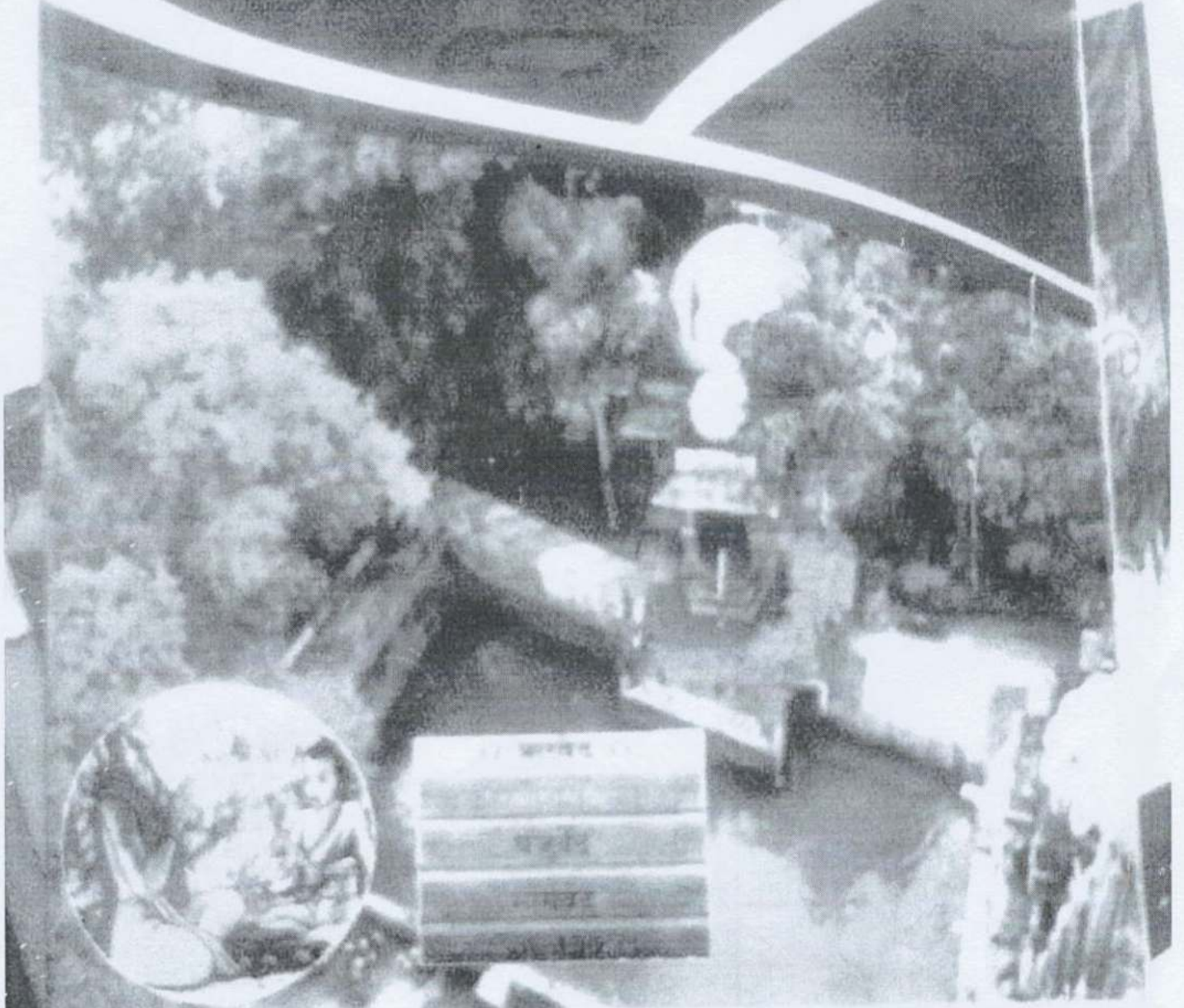
भोपाल, मध्यप्रदेश मो. 9479906590

मुद्रण : अथर्व प्रकाशन

~~1.1.3~~

पुस्तक भंडार

ब्रह्मी



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

ग्रंथी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के अनुसार म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग
के निर्देशान्तर्गत केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित
संस्कृत साहित्य के वार्षिक परीक्षा पद्धति नवीन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत
बी.ए. प्रथम वर्ष, के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक
(2021-22 से प्रवर्तित)

प्रधान सम्पादक
म.प्र. के पूर्व महामहिम राज्यपाल डॉ. भाई महावीर द्वारा सम्मानित एवं सप्तर्षि सम्मान प्राप्त,
डॉ. हरीराम रेदास

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत
शास. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल
सम्पादक
भाग - एक

प्रथम प्रश्न-पत्र

डॉ. हरिप्रसाद दीक्षित
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत
शास. रामानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लालघाटी, भोपाल
तथा

संकायाध्यक्ष वेद, वेदान्त एवं साहित्य संकाय,
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन
डॉ. शुभम शर्मा,

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन
भाग- दो

द्वितीय प्रश्न-पत्र

डॉ. हरीराम रेदास
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत
शास. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

डॉ. गोविन्द गन्धे
डी.लिट., संस्कृत

प्राचार्य, लोकमान्य तिलक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन
तथा कार्यपरिषद् सदस्य विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

बची
प्रकाशक डॉ. जे.एस. शर्मा, डॉ. दीक्षित, डॉ. शर्मा, डॉ. जे.एस. डॉ. राय

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

ISBN-978-91-94012-78-1

राष्ट्रीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनाअंतर्गत, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
स्वतंत्रनाथ टाकुर मार्ग, बानगंगा,
भोपाल - 462 003
दूरभाष - 0755-2553084, 2762123

संस्करण : प्रथम, 2021

मूल्य : ₹ 240/- (दो सौ चालीस मात्र)

रूपरेखा : अक्षर ग्राफिक्स, न्यू मार्केट, भोपाल

मुद्रक : एम के ऑफसेट, भोपाल

हिन्दी भाषा मानवीय मूल्यों का साधन का उपयोग करते हुए संस्कृत प्रस्तावना का अंकुरण करती है। देश और धरती हैं। यदि यह आज विश्व का कारण उसको व्याकरणपरक परिपक्व जन-बोलियों को अधिष्ठात्री हिन्दी अनुसंधान और तकनीक के विकास का शिक्षाविदों का मानना है कि विषयगत पर माध्यमगत दबाव है। मातृभाषा के शिक्षार्थी पर भाषा का अनावश्यक दब

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी उदाहरण है। चूँकि मातृभाषा मनुष्य के उसके माध्यम से शिक्षार्जन सबसे सहज के सभी राज्यों में मातृभाषा के माध्यम से, ग्रन्थों के लेखन-प्रकाशन को व्यवस्था प्रवर्तित योजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों को उपलब्ध करा रही है। हिन्दी का सर्वांगीण मेरी मान्यता है कि सभी अधुनातन विषय रहनी चाहिए।

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी शिक्षा के क्षेत्र में माध्यम परिवर्तन को अंतर्गत विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम में बैठने वाले हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी मेरी अभिलाषा है कि हिन्दी कार्य में प्रदेश के प्राध्यापक लेखन, पा इनके उपयोग को बढ़ावा देकर अपना साथी बनाकर अकादमी के कार्य को

चित्रकला

DR. A Lok BHAWAR

Research Scho. Ms. Ghousia Parveen

1. पीयर-रिव्यू या यूजीसी द्वारा सूचीबद्ध शोध पत्रिका में शोध पत्र

डॉ. आलोक भावसार

स.क्र.	पृष्ठ संख्या एवं प्रकाशन वर्ष के साथ शोध का शीर्षक	जर्नल का नाम	ISSN No	प्रभाव कारक (Impact Factor) यदि कोई हो तो	सह लेखकों की संख्या	क्या आप मुख्य लेखक हैं	A/R अंक
1	Pg. No.12 to 15 अंक 03 दिसम्बर 2021 " Bhopal with a Beautiful Past : Magnificent Wood Carving of Gohar Mahal"	उत्कर्ष, ललित कलाओं को समर्पित शोध पत्रिका	ISBN 978-93-83954-75-9		01	सह लेखक हैं	
2	Pg. No. 33669 to 33676 Volume 32, Issue 03, 2021 " ANCIENT ART AND BEAUTY IN INDIA"	Turkish Journal of Physiotherapy and Rehabilitation (TJPR)	ISSN 2651-4451 e-ISSN-446X		01	सह लेखक हैं	

अंक-03 दिसम्बर 2021

उत्कर्ष Utkarsh



ललित कलाओं को समर्पित

(चित्रकला, मूर्ति कला, फोटोग्राफी, संगीत)



शोध पत्रिका



मुख्य सम्पादक :-

कला भूषण डॉ० राजेन्द्र सिंह पुण्डीर
डी०लिट०



उत्कर्ष ललित कला अकादमी, उ०प्र०

ISBN

978-93-83954-75-9

संस्करण

तृतीय, दिसम्बर-2021

मूल्य

रु. 300/-

भाव-विन्यास

आशीष कुमार पाण्डेय

शब्द-संयोजन

सौरभ शर्मा, अरविन्द भारती

आवरण पृष्ठ

डॉ. प्रज्ज्वल पुण्ढीर / डॉ. यीशू यादव

मुद्रक

हिन्द प्रिन्टिंग प्रेस, लल्ला मार्केट, निकट भैरों मन्दिर, बरेली (उ.प्र.)

प्रकाशक/डिस्ट्रीब्यूटर

मो. 9319930140, 9897094711

रंजन पब्लिकेशन, बरेली

44-उमंग, पार्ट-2,

महानगर टाउनशिप, बरेली-243006

मो.-91 96395 23174

Email

ranjanpublication@gmail.com



UTKARSH SHODH PATRIKA

Chief Editor

Kala Bhushan Dr. Rajendra Singh Pundir

D. Lit.

नोट : प्रस्तुत शोध पत्र में सम्पादक की कोई भूमिका नहीं है। कोई वाद बरेली न्यायालय में होगा।

Bhopal with a Beautiful Past: Magnificent Wood Carving Of Gohar Mahal

Ms.Ghousiya Parveen

*Research Scholar *

Dr Alok Bhavsar

HOD Department of Fine Art,Hamidia Arts and Commerce College Bhopal

ABSTRACT:

In this article the research has been shown on the art of Wood Carving done over the past historical monuments in the Bhopal, heart of the Madhya Pradesh, India. The Gohar Mahal is a beautiful example of the wooden carving art done over it and which has been preserved by the government recently. It also reflects the use of different types of wood and also the presence of different types of culture in its art work. The Gohar Mahal was built by Wazeer Mo Khan for Gohar Begum the first women ruler of Bhopal and wife of Nazar Mo Khan in 1820.

INTRODUCTION:

The Gohar Mahal is situated at the bank of Upper Lake. This was constructed for Gohar Begam by her husband Nawab Nazar Mohammad Khan. It's a magnificent example of the blend of Hindu and Islamic architecture. The Ministry of Textile with the Madhya Pradesh Handloom and Handicrafts Vikas Nigam has taken initiative for maintaining this glorious historical building. INTACH has worked in the renovation of the Mahal by maintaining its original fabric and construction details with new function imparted. The complex is now been converted into an urban haat.



Gohar Mahal

Gohar Mahal:

The splendid structure of three floors, built on a contoured site having approach from road to the building at every floor. The site has the entrance from the south-east direction, whereas building has an entry from the Eastern corner of the Mahal. It is having two courtyards, which is divided into three transverse mass. The total floor area of the Gohar Mahal is 650 sqm including the massive load bearing wall of brick. The top floor of the Mahal is enclosed with wooden frame of mansard (A mansard or mansard roof is a four-sided gambrel-style hip roof characterized by two slopes on each of its sides with the lower slope, punctured by dormer windows) which is covered with slate tile. The interior is finished with lath, plaster, and verandhas all around the courtyards with direct and indirect opening in the structure.



Interior view of Gohar Mahal

Dcoration and Woodwork of Gohar Mahal:

Gohar mahal is like the hidden oyster present in the deep ocean. Qudasia Begum and the palace were brought by the first Nawab of Bhopal in 1819-37 or in 1820 and the responsibility of saving this beautiful and precious memorial was taken by her. A story is hidden behind this condition of the Gohar Mahal because it remained a major Centre, but gradually it happened in the surrounding area and the other buildings and left to pay attention to the Gohar Mahal. Qudasia Begum, who once lived in the palace, went from here and took the command in Sadar Manzil. The importance of the palace was reduced and in many parts of the government offices were opened. Gradually the special part's wood carving was finished. Special building around the Gohar Mahal, known as Nazar Mahal is connected to it and the mosque. The Gohar Mosque of the two mosques of Biwi are present in it. The capital project, courageously tried to bring back its lost sunshine (Prashant Hevdekar), that at that time the condition was that we did not have any such building in our city, which could go anywhere that is special and important. Taj Mahal was also a habitation of the people, leave it, so became buried in this debris and to decompose 2 - 2 feet of condition of the palace was cleaned and painted in little rousing and thus the after a long time and all estimate the amount of about Rs. 85 lakhs. This edge of the Upper Lake and area.



and they were not ready to necessary to get the castle garbage. The work began debris and the palatial repaired. The palace was which the castle returned a palace looked beautiful these works were made to about Rs. 73 lakhs and palace is about 4 around the is spread over 4.65 acres of



Nawab Gohar Begam Qudsiya begam:

Gohar Begam was born to Nawab Ghous Mohammad Khan and married Nawab Nazar Mohammad Khan in 1817. In 1819, her husband was assassinated. Thus, the 18 year old Qudsiya Begum became the Nawab of Bhopal. She was the first female ruler of Bhopal. She was not educated but was ahead of her time. She refused to follow the purdah tradition which was been followed by each female during that era. She also declared that her two-year old daughter Sikander will rule after her. Being all powerful, her decisions were accepted by all the male family members without any questions or objections. She had a lot of concern for her people; she used to ask for the well being of her family and take her dinner only after receiving the news every night. She built her palace by the name Gohar Mahal. It is a magnificent expression of fusion of Hindu and Mughal architecture. Today, after proper restoration, it serves as a popular venue for organising art and craft fairs attracting artisans from all over Madhya Pradesh. She also built the famous Jama Masjid of Bhopal in 1837.

Nawab Gohar Begam Qudsiya begam:

Gohar Begam was born to Nawab Ghous Mohammad Khan and married Nawab Nazar Mohammad Khan in 1817. In 1819, her husband was assassinated. Thus, the 18 year old Qudsiya Begum became the Nawab of Bhopal. She was the first female ruler of Bhopal. She was not educated but was ahead of her time. She refused to follow the purdah tradition which was been followed by each female during that era. She also declared that her two-year old daughter Sikander will rule after her. Being all powerful, her decisions were accepted by all the male family members without any questions or objections. She had a lot of concern for her people; she used to ask for the well being of her family and take her dinner only after receiving the news every night. She built her palace by the name Gohar Mahal. It is a magnificent expression of fusion of Hindu and Mughal architecture. Today, after proper restoration, it serves as a popular venue for organising art and craft fairs attracting artisans from all over Madhya Pradesh. She also built the famous Jama Masjid of Bhopal in 1837.

Gohar Begam ruled till 1837. Before her death, she adequately trained her daughter to rule. The different types of woods were used for the decoration of many historical monuments located in Bhopal. Since the availability of structural woods was very common around Bhopal, Timber is mostly reflected in the art works of the monuments. Some common types of woods used in Bhopal include:

Timber Trees

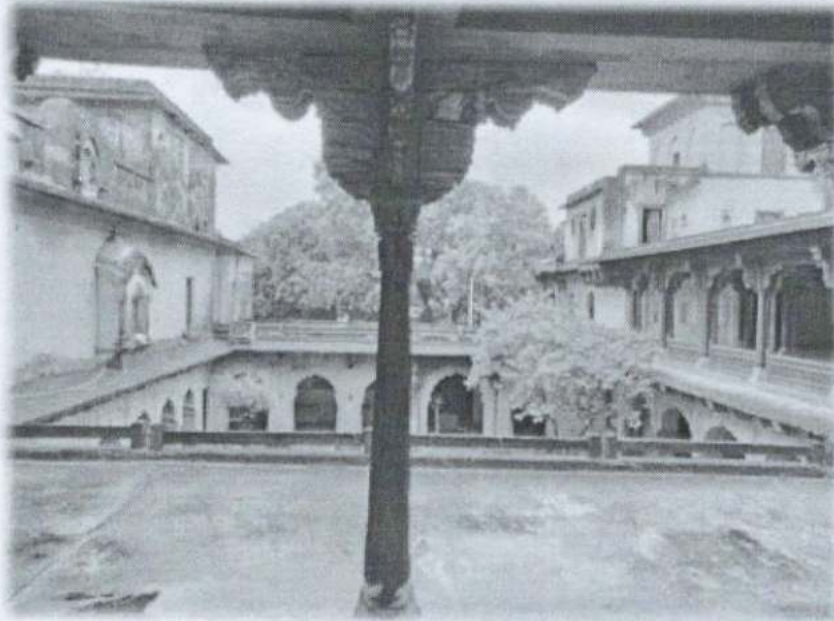
Dalbergia Latilolia, D. Sissoo, Tectona grandis, Santalum Album, Pterocarpus Masupium, Albizzia Bocosa, Albizzia Bebbek, Feronia Elephantum, Tesminalia Crenulatr, Ceiba Malabaricum, Chloroxylen Swietenia, Dalbergia, Lanceolaria



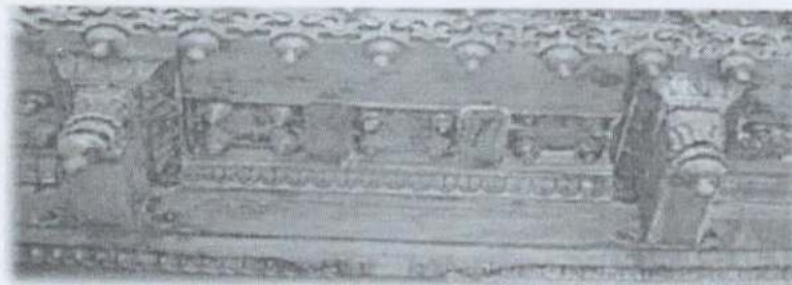
Since the flora present in Madhya Pradesh is deeply affected by its geographical terrain and its red soil (malwa plateau) present in these region the selective types of trees are cultivated here. We are aware of the analysis of the Gauhar Mahal. White paint has been used in the inner parts of the castle and at many points and rooms. Some parts are painted light green. Due to the presence of basement in Gohar Mahal, it remains attached to the ground. There are no papules unlike Jama Masjid in this palace. There are two big and round floor patch bars, one of them is Deewan-E-Aam and the other one is the Deewan-E-Khas. These two are also having small courtyards. There are many different parts in Gohar Mahal that meet one another at some point of the palace. The Sadar Darwaza of Gohar Mahal is quite large and made of wood. In the middle of the door, there is a wide screw on the big strip. On the door there is a large beautiful vaulted rate. There are big enough locks at both the side of the ground In Gauhar Mahal The bottom hall present in the junk special. Made of stone. Below is the flower of lotus, which is a fine example of Hindu and Muslim folklore. These suites are frozen on square stones. These rates are in the hallway, and in the present time this hall has been split with plywood, which is pink painted.

In this hall there are small palliative cylindrical cabinets on the back, both of which are beautiful wooden doors of this hall which keeps a special position in the Gohar Mahal. The specialty of these is the carpentry of wood. At present, these doors of palaces are seen in fresh and good condition. Sayyed Azhar Ali Siddiqi explains that the condition of these doors in the middle had become very bad, the place was spoiled from the place. The artisans of Rajasthan did the repair work in them and after varnish etc. Their beauty increased. These doors are used to go to other rooms of the palace. At the same place, there is a way to go above the shade in the courtyard just outside the rates. There is also a very beautiful maple in its door. The spiders have kept the webs due to being closed forever. These carved doors have been made of Shisham wood or Timber wood (Sodar Wood) which are still very strong and in good shape. Place in both the doors of the doors - place the iron big Large nails are inlaid.

The doors of the doors are simple, but in the frameworks there is a very fine masonry. On the doorstep, these menus are present in the same tolerance to go to the second floor of the rate at which the entry of the palace has to be filled with the cleaning of the palace. A little bit less on going upstairs than these shiny ones. The way through which is the way to go in and out. These interior halls are beautiful rosewood works And even after such a pass has passed, it is still very bright today. There are three wooden carved carts between the two halves. And in the halls in which beautiful paintings have been done . There are stone pockets in the lower end in the sculptures. Upon the chowk there is the flower of lotus of the fourteen Kanguras and above the upper petals, there is a flower of the Lotus of 12 petals. Some carvings of this part were present on wood and on doors. He is buried under municipal corporation.

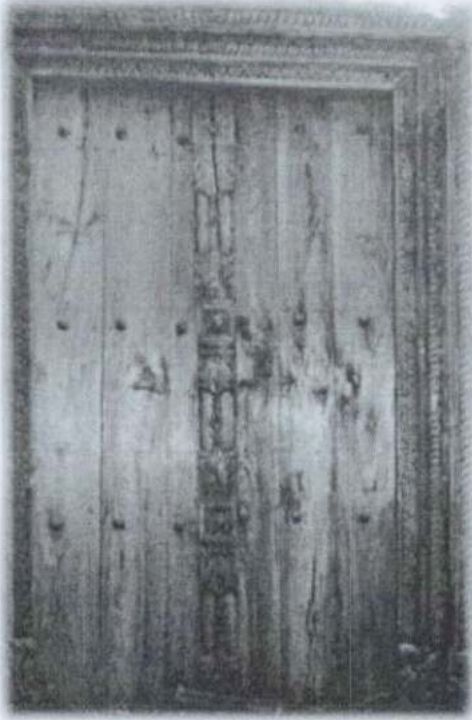


Gohar Mahal



Wood Carving artists:

The palace which the government has made from waste today is because of the help of Raajdhani Pariyojna . And in his own life, the shadow shows the face to the people and how good it is to be aware of the human nature. The carving wood was the time in which the glory of the Gohar Mahal has passed, it has passed a long time and the property is made by the artisans who saw the wood in the palace and where the craftsmen seem impossible. IFFCO official Prashant Hevdekar Sahab points out that in the time the buildings are in these buildings. No special or special technique of that time is seen in any building. There are mixed techniques in every building. It was assumed that Bhopal was present in the middle of the country, then obviously the impact of every part would be here. By the way, such periods are passed, like the timing of the iron, the timber of the timber is similar to the timber of wood and at the time when these buildings were made, iron girder and the rest were easily found. Well I have mentioned this before. Still, the door of the door comes to Rajasthani, and in some door the Gujarati fan appearsand Kashmeeri art. It was decided that at that time the artisans came from Gujarat and Kashmeer they worked here for woodwork.



Wodden door



Main Door of Gohar Mahal

CONCLUSION

The decision was taken after considering all the palace buildings after examining all the palaces of Bhopal and, after examining the carvings after the inspection of every palace, even after reaching this result I still have these experiments in these buildings New talisman does not have. The Gohar Mahal, which was renovated between Qadasiya Begum, between 1819 or 20, A few years ago, in the attempt of the capital project, it was brought out in a very old form, its cleaning, son-in-law, repair etc. was done. Approximate amount of approximately 73 lakhs was made for doing all these works. The new look was given to the Gohar Mahal and the result was that in the heart of the city today - the reasons for being bouch now are different types of tablas are here, here fairs, exhibitions, handmade markets etc fill the effect. And in large numbers urban people come to see them. The biggest estimation I applied was that in 1819-20 it was in Uruj that at the time of celebrating Shantagara, Masanari and buildings, it was in Uruj. It is true that our dates are the treasures that are supposed to save our voices. These old buildings only tell us the story of yesterday. Previously nobody had done any research on the Gohar Mehal. I am lucky that this golden opportunity I got. I know that this is the great work of timber in our city.

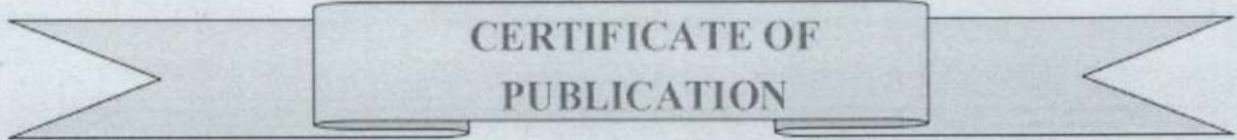
REFERENCES

- (1) Tarekh E riyasat /Bhopal book house budhwara ,Allama Syed Abid Ali Wajdiul Husseni Kazi Bhopal, 1994
- (2) Begmaat E Bhopal/Nizami press Kanpur Mo Abdul Rehman ,by Mo Ameen Zubaidi ,1926
- (3) Tajul Iqbal / Nizami press Kanpur Mo Abdul Rehman/Nawab Shahjahan Begam, 1926
- (4) Climate of Bhopal <http://en.wikipedia.org/wiki/Bhopal>
- (5) Gohar Mahal Ar. Amrita Shukla, Ar. Amandeep Kaur
Sustainable Constructivism: Traditional vis-à-vis Modern Architecture ISBN: 978-93-83083-76-3 48
<http://www.khojiworld.com/Default2.aspx>
- (6) Shading devices <http://www.wbdg.org/resources/suncontrol.php?r=sustainable>
- (7) Wind direction <http://www.theweatherprediction.com/habyhints2/432/>,

Turkish Journal of Physiotherapy and Rehabilitation (TJPR)

ISSN 2651-4451 | e-ISSN 2651-446X | Period Tri-annual | Founded: 1974 |
Publisher Türkiye Fizyoterapistler Demeđi | <http://www.turkjphysiotherrehabil.org>

UGC CARE LISTED GROUP-II SCOPUS CERTIFIED JOURNAL



This is to Certify the Paper entitled

Ancient Art and Beauty in India

Authored By:

Ms. Ghousiya Parveen¹, Dr. Alok Bhavsar²

From

¹Research Scholar

²HOD Department of Fine Art, Hamidia Arts and Commerce College, Bhopal.

**Has been published in Turkish Journal of Physiotherapy and Rehabilitation,
Volume 32, Issue 03, 2021.**

Best wishes,
Editor-in-Chief
Prof. Dr. Deniz İNAL İNCE
Turkey,
Turkish Journal of Physiotherapy and Rehabilitation (TJPR)

Email ID: info@turkjphysiotherrehabil.org



Tyoti Shanotia

• शोध-पत्रिका •

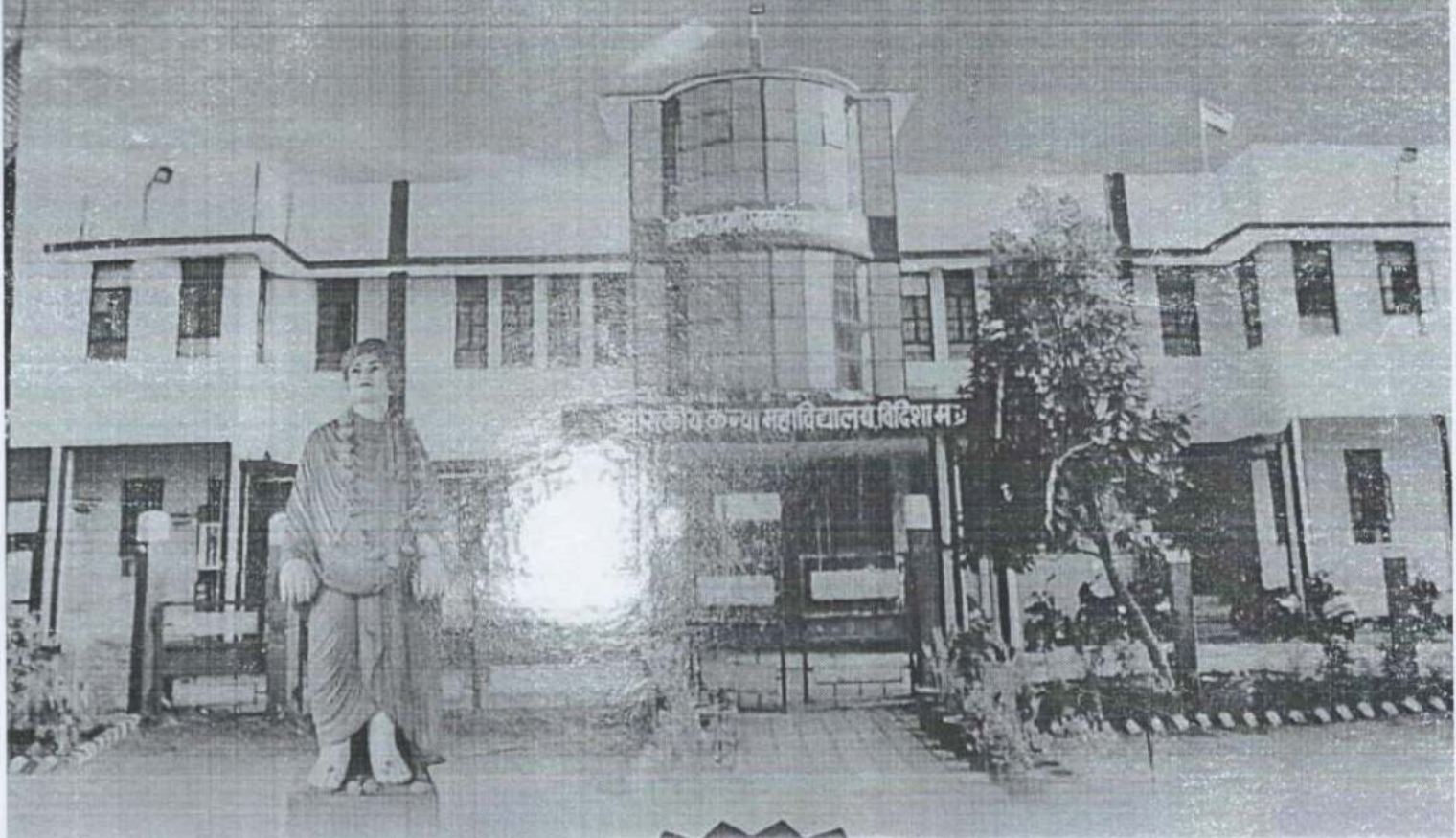
ISSN 2395-5888

सत्रहवां अंक

पौष शुक्ल 2078

दिसंबर, 2021

दर्श-दिशा



NATIONAL WEBINAR

On

NEW EDUCATION POLICY

PROSPECTS AND CHALLENGES

Research Papers

Principal

Dr. Manju Jain

Govt. Girls (Nodal) P. G. College

Vidisha (M. P.)

Editor

Smt. Kiran Jain

Associate Prof. - Hindi

Govt. Girls (Nodal) P. G. College

Vidisha (M. P.)

✽ प्रकाशक ✽

शासकीय कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय

विदिशा (म. प्र.)

**शोध पत्रिका
दर्श दिशा
अनुक्रमणिका**

क्र.	प्रो. नाम/पद/महा. का नाम	विषय	पृ. सं.
1.	डॉ. मलखानसिंह प्राध्यापक, भूगोल शा. कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय	शोध लेखन पद्धति की रूपरेखा	11
2.	डॉ. सी. विजय खेस सहा प्राध्यापक, गृह विज्ञान शा. कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय	व्यावसायिक विकास में गृहविज्ञान शिक्षा की भूमिका	14
3.	डॉ. सीमा चक्रवर्ती सहायक प्राध्यापक, अर्थ शास्त्र शा. कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय	राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य	16
4.	डॉ. संध्या जैन सहा. प्राध्यापक, समाजशास्त्र शा. कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय	वृद्धों की बढ़ती समस्या एक चिंतनीय विषय	17
5.	डा. सुमन कटारिया प्राध्यापक अर्थशास्त्र शा. महाविद्यालय, विदिशा	ग्रामीण भारत में रोजगार की संभावनाएं	19
6.	डॉ. वनिता वाजपेयी प्राध्यापक, हिन्दी शा. महाविद्यालय विदिशा	कबीर : कवि अथवा चिंतक	21
7.	डॉ. ज्योति धनोतिया सहा. प्राध्यापक हिन्दी शा. हमीदिया कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल	महोदवी वर्मा और पथ के साथी	22
8.	श्रीमती किरण जैन सहायक प्राध्यापक शा. कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय	भारत और हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी	
9.	श्रीमती सविता सोनी सहा. प्राध्यापक इतिहास शा. कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय	लोकगायन की परम्पराएं मध्यप्रदेश से संदर्भ में	

महादेवी वर्मा और पथ के साथी (सुभद्रा कुमारी चौहान के विशेष संदर्भ में)

डॉ. ज्योति धनोतिया
सह. प्राध्यापक (हिंदी)

शा. हमीदिया कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल

आधुनिक युग की मीरा और जीवंत गद्य लिखने वाली महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ। महादेवी मिडिल में प्रांत भर में प्रथम, एंट्रेस प्रथम श्रेणी में, फिर 1927 में इंटर, 1929 में बी. ए. 1932 में प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया। विभिन्न गतिविधियों में आप की सक्रिय भूमिका सराहनीय रही। प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य और 1960 में कुलपति पद कसे सुशोभित किया। 'चांद' का संपादन, 'विश्ववाणी' के 'युद्ध अंक' का संपादन आपकी बेजोड़ पत्रकारिता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। 'साहित्यकार' का प्रकाशन और संपादन भी आपने किया। इन सबके अलावा नाट्य संस्थान 'रंगवाणी' की प्रयाग में स्थापना आपके द्वारा की गई।

निहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत, यामा तथा दीपशिखा में आपके काव्य की खुशबू फैली है, तो अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, स्मृति की रेखाएं, श्रंखला की कड़ियां, मेरा परिवार, चिंतन के क्षण, सप्तपर्णा, क्षणदा, हिमालय, साहित्यकार की आस्था तथा निबंध में आपका गद्य सुरभित हुआ है।

आपको समय-समय पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। हिंदी के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से महादेवी सम्मानित हुईं। भारत सरकार की ओर से पद्म भूषण और पद्म विभूषण अलंकरण से नवाजी गई। 11 सितंबर 1987 को साहित्य की इस देवी का देवलोक गमन हुआ।

'पथ के साथी' महादेवी वर्मा द्वारा लिखे गए संस्मरणों का संग्रह है, जिसमें उन्होंने अपने समकालीन रचनाकारों का चित्रण किया है। जिस सम्मान और आत्मीयता पूर्ण ढंग से उन्होंने साहित्यकारों का जीवन दर्शन और स्वभाव गत महानता को स्थापित किया है, वह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। पथ के साथी में संस्मरण भी हैं और महादेवी द्वारा पढ़े गए कवियों के जीवन वृत्त भी।

उन्होंने एक ओर साहित्यकारों की निकटता, आत्मीयता और प्रभाव का काव्यात्मक उल्लेख किया है और दूसरी ओर उनके जीवन दर्शन को समझने और परखने का प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न महादेवी के चिंतन, अनुभूति और दृष्टिकोण की विशद विशेषताओं को रेखांकित करता है।

'पथ के साथी' की भूमिका में वे लिखती हैं— 'अपने अग्रज सहयोगियों के संबंध में, अपने आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता। मैंने साहस तो किया है, पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगतता मेरे लिए संभव नहीं है। मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते हैं, उससे वे बहुत उज्ज्वल और विशाल हैं, इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे। इन्होंने सप्तर्षि - गुरुवर रवींद्र नाथ टैगोर, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सियारामशरण गुप्त पर संस्मरण लिखे हैं। यहां हम सुभद्रा जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे महादेवी जी की दृष्टि से। पथ के साथी का एक संस्मरण राष्ट्रीय काव्यधारा की महान कवयित्री एवं राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष हिस्सा लेने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान पर लिखा गया, जो एक ही विद्यालय में पढ़ने वाली और जिनमें महज 2 वर्षों का अंतर रहा है। सख्य भाव के साथ ही सुभद्रा जी और महादेवी जी के कवि रूप को सामने रखती हैं। वे महादेवी जी से छात्र जीवन से ही सुहानुभूति और आत्मीयता का भाव रखती हैं। 'वीर गीतों' की कवयित्री के लिए महादेवी जी लिखती हैं— "मझोले कद तथा उस समय की देहयष्टि में ऐसा कुछ उग्र या रौद्र नहीं था जिसकी हम वीरगीतों की कवयित्री में कल्पना करते हैं। — सब कुछ मिलाकर एक अत्यंत निश्चल, कोमल उदार व्यक्तित्व वाली भारतीय नारी का ही पता देते थे।" मैंने हंसना

सीखा है मैं नहीं जानती रोना कहने वाली सुभद्रा जी की हसी विश्व ही असाधारण थी। अपने निश्चित पथ पर अडिग रहना और सब कुछ हसते-हसते सहना उनका स्वभावजात गुण था। सुभद्रा जी के स्वतंत्रता सेनानी थे, उन्होंने भी पाँते की सह पकड़ी और महादेवी जी को हसते-हसते बताती थी कि जेल के समय इतनी अधिक फूल मालाएँ मिल जाती थी कि जेल में उन्हीं का तकिया बना पुष्प शैल्या का आनंद लेती थी। घर-बाहर (जेल) की विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल करने के लिए कोई समझौता किया। किसी भी काम को छोटा बड़ा वे नहीं समझती थी। सुभद्रा जी ऐसी गृहिणी थी जो अपने घर की धरती को समस्त हृदय से चाहती थी उनकी गृहस्थी का उल्लेख करते हुए महादेव जी कहती हैं - "उस छोटे से अब्बने घर की छोटी सी सीमा में उन्होंने क्या नहीं संगृहीत किया। छोटे बड़े पेड़, रंग बिरंगे फूलों के पीछों की ब्यारियाँ, अणु के अनुसार तरकारियाँ, गाय, बच्चे आदि बड़ी गृहस्थी की सब सज्जा वहाँ विराट दृश्य के छोटे चित्र के समान उपस्थित थी।" ममतामयी, उदार, मृदु, सृजनशीला नारी थी। महादेवी जी के शब्दों में "नारी के हृदय में जो गंभीर ममता-सजल वीर-भाव उत्पन्न होता है वह पुरुष के उग्र शौर्य से अधिक उदात्त और दिव्य रहता है। सुभद्रा जी का जीवन के प्रति विश्वास ममत्व भरा है और यही उनके काव्य के प्राण है-

"सुख भरे सुनहले चादल रहते हैं मुझको घेरे। विश्वास, प्रेम, साहस है जीवन के साथी मेरे।"

सुभद्रा जी ने कभी किसी भी कार्य को करने में हीनता अनुभव नहीं किया। "घर से बाहर बैठकर वे कोमल और ओज भरी छंद लिखने वाले हाथों से नोबर के कंडे पाथती थी।"

सुभद्रा जी देश के साथ-साथ समाज की समस्याओं के प्रति भी जागरूक एवं चिंतनशील रही हैं। समाज की अनेक समस्याओं पर विचार कर उनके समाधान भी प्रस्तुत किए। समाज की सड़ी-गली रूढ़ परंपराओं का विरोध करते हुए उन्होंने अपनी पुत्री के विवाह में घोषणा की कि मैं कन्यादान नहीं करूंगी। जातिवाद की संकीर्ण तुला पर वर की योग्यता को तौलना उन्हें अस्वीकार था।

"भाषा, भाष, छंद की दृष्टि से नए, आँसी की रानी जैसे वीर गीत तथा सरल स्पष्टता में मधुर पगीत मुक्त यथार्थवादिनी मार्मिक कहानियाँ आदि उनकी मौलिक प्रतिभा के ही सृजन हैं।" वे अत्यंत जीवन्त थी। मृत्यु की चर्चा पर वे कहती थी - "मैं चाहती हूँ मेरी एक समाधि हो जिसके चारों ओर नित्य मेला लगता रहे, बच्चे खेलते रहें, स्त्रियाँ गाती रहें, और कोलाहल होता रहे। अब बताओ तुम्हारी नामधाम रहित लहर से यह आनंद अच्छा है या नहीं।"

इस प्रकार सुभद्रा जी के कवि रूप, लेखक रूप, स्वतंत्रता सेनानी रूप, सदगृहस्थन रूप, भक्त रूप, ममतामयी माँ, पति की सहघर्मिणी रूप समाज की सड़ी-गली रूढ़ मान्यताओं के प्रति विद्रोह करने वाली अंतःसाथ ही साथ लेखिका को अपनी छोटी बहन की तरह स्नेह करने वाली आदि अनेकानेक विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व को महिमामंडित करती हैं। अल्पायु में उनका निधन हिंदी साहित्य की अपूरणीय क्षति है। वास्तव में महादेवी जी ने अपने अंग्रेजों एवं समकालीन साहित्यकारों पर जो संस्मरण लिखे हैं, स्मृति के झरोखों से जो शब्द चित्र खींचे हैं वे साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। कवियों के कवि कर्म से तो उनकी कविताओं के माध्यम से परिचित होते ही हैं किंतु उनके व्यक्तित्व, उनके निजी गुणों से सुधि पाठक गण अपरिचित ही रह जाते, यदि महादेवी जी इन्हें नहीं लिखती। कवियों एवं लेखकों के बारे में पाठकों का प्रायः जिज्ञासा बनी रहती है। महादेवी जी के ये संस्मरण अत्यंत रोचक शैली में कवियों के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व को बखूबी रेखांकित करते हैं। लेखिका चुकी छायावादी कवयित्री हैं, अतः उनकी भाषा शैली में छायावाद की स्पष्ट झलक, कवित्वमय भाषा एवं सूक्ष्म वर्णन को देखने को मिलता है। बहुत बारीकी एवं व्यक्तित्व की एक-एक रेखा से संस्करणों का ताना-बाना बुना गया है। यह संस्मरण वास्तव में साहित्य पथ के साथी हैं।

संदर्भ:

पथ के साथी - महादेवी वर्मा, प्रकाशक भर्ती भंडार, लीडर प्रेस इलाहबाद

STUDY OF PROSE

(Theory & Practical)

*For the Students of Second Year with
English Literature - Major)*

Editors

Dr. Hemant Gahlot
Professor and Head
Dept of PG Studies and
Research in English
Govt Girls PG College, Ujjain

Dr. Nisha IndraGuru
Associate Professor of English
Govt (Auto) Girls P G College of
Excellence, Sagar

Dr. Sumangla Pateriya
Associate Professor of English
Govt Hamidia Arts and
Commerce College, Bhopal

Dr Sonia Singh Kushwah
Associate Professor of English
Govt Kamlaraje Girls P.G.
College, Gwalior



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

STUDY OF PROSE

Editors- Dr. Gahlot, Dr. Pateriya, Dr. Guru, Dr. Kushwah

ISBN- 978-93-94032-83-5

© **Madhya Pradesh Hindi Granth Academy**

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakur Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084

Edition : First, 2022

Price : ₹ 170 (One Hundred Seventy) Only

Composing: Akshar Graphics, New Market, Bhopal

Printer : M.K. Offset Printers And Publishers Bhopal

हिन्दी भाषा मानवीय मूल
साधन का उपयोग करते हुए
प्रशिक्षणकालता का अंकुरण करती
भूमि और चरण हैं। यदि यह अ
इसका कारण उसकी व्याकरण
अनेक जन-बोलियों की अधि
विषय, अनुरोध और तकनीय
सकता है। शिक्षाविदों का मानन
विद्यार्थियों पर माध्यमगत दबा
होती ही है, शिक्षार्थी पर भाषा
है।

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ
व्यवहारण है। चूँकि मातृभाषा म
उसके माध्यम से शिक्षार्जन सब
देश के सभी राज्यों में मातृभाषा
वृद्धि से, राज्यों के लेखन-प्रकाश
केन्द्र प्रवर्तित योजना के अंतर्गत
इस शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्य
उपलब्ध करा रही है। हिन्दी व
मेरी मान्यता है कि सभी अ
बनी रहनी चाहिए।

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ
शिक्षा के क्षेत्र में माध्यम परि
अंतर्गत विश्वविद्यालयीन प
परीक्षाओं में बैठने वाले हिन्
कर रही है।

मेरी अभिलाषा है
के कार्य में प्रदेश के प्राध्या
बीच इनके उपयोग को
अध्ययन का साथी बनाकर

English Language and Indian Culture



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

**English Language
and
Indian Culture**
Foundation Course (English)
First Year

Authors

Dr. Vinay Jain
Professor,
Govt. Girls College, Khandwa

Dr. Vinita Singh Chawdhry
Professor,
Govt. Hamidia College, Bhopal

Dr. Mamta Trivedi
Asstt. Professor,
Lokmanya Tilak College, Ujjain



Madhya Pradesh Hindi Granth Academy

ENGLISH LANGUAGE AND INDIAN CULTURE

Authors- Dr. Jain, Dr. Chawdhry, Dr. Trivedi

© **Madhya Pradesh Hindi Granth Academy**

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakur Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084

Edition : Fourth Edition, 2022

Price : ₹ 45.00

Composing: Akshar Graphics, New Market, Bhopal

Printer : Radhika Prakashan Pvt. Ltd. M.P. Nagar,
Zone-I, Bhopal. Tel.: 0755-4026506

हिन्दी भाषा मानवी
साधन का उपयोग करते हुए
का अंकुरण करती है। देश
हैं। यदि यह आज विश्व का
व्याकरणात्मक परिपक्वता
की अधिष्ठात्री हिन्दी का
तकनीक के विकास को इ
मानना है कि विषयगत वी
दबाव है। मातृभाषा के मा
का अनावश्यक दबाव भी

मध्यप्रदेश हिन्दी
उदाहरण है। चूँकि मातृभा
उसके माध्यम से शिक्षार्थी
के सभी उन्मेषों में मातृभाषा
से, ग्रन्थों के लेखन-प्रकाश
प्रवर्तित योजना के अंतर्गत
शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थी
करा रही है। हिन्दी का
मान्यता है कि सभी अ
रहनी चाहिए।

मध्यप्रदेश हिन्दी
के क्षेत्र में माध्यम परिवर्तन
विश्वविद्यालयीन पाठ्य
बैठने वाले हिन्दी माध्यम
मेरी अभिलाषा
कार्य में प्रदेश के प्राध्य
इनके उपयोग को बढ़ा
साथी बनाकर अकाद



9 789394 032040



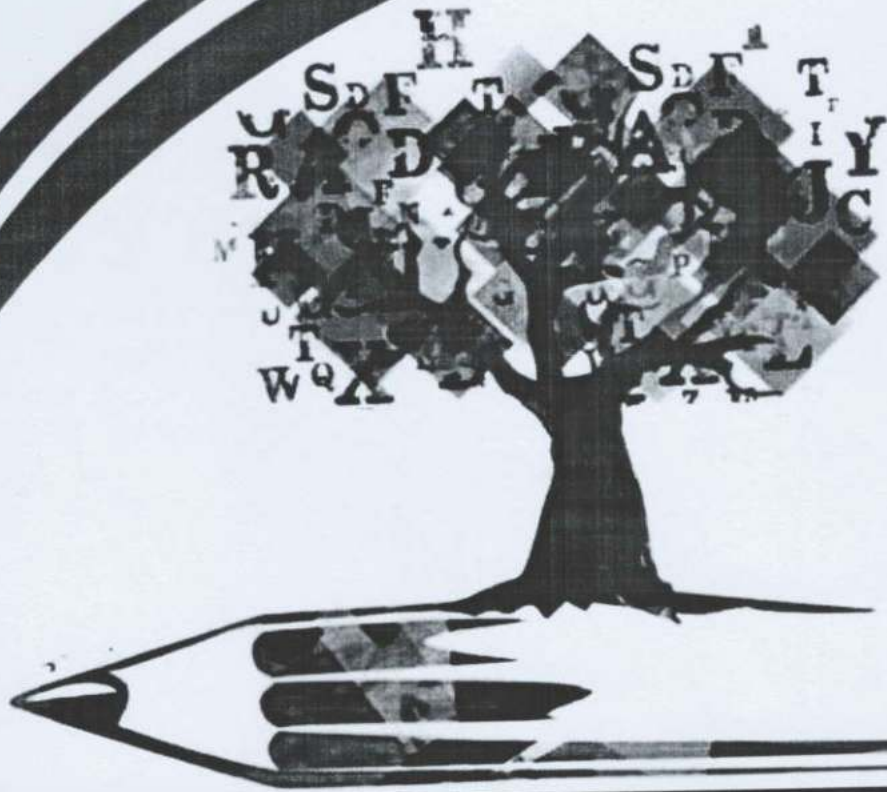
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

ENGLISH LANGUAGE AND FOUNDATION



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

English Language and Foundation

Foundation Course (English)
Second Year

Authors

Dr. Vinita Singh Chawdhry
Professor,
Govt. Hamidia College, Bhopal

Dr. Mamta Trivedi
Asstt. Professor,
Lokmanya Tilak College, Ujjain

Dr. Nidhi Nema
Asstt. Professor
Govt. Kamla Nehru Girls College, Balaghat



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

English Language and Foundation

Foundation Course (English)
Second Year

Authors

Dr. Vinita Singh Chawdhry
Professor,
Govt. Hamidia College, Bhopal

Dr. Mamta Trivedi
Asstt. Professor,
Lokmanya Tilak College, Ujjain

Dr. Nidhi Nema
Asstt. Professor
Govt. Kamla Nehru Girls College, Balaghat



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

ENGLISH LANGUAGE AND FOUNDATION

Authors- Dr. Singh, Dr. Trivedi, Dr. Nema

© Madhya Pradesh Hindi Granth Academy

ISBN- 978-93-94032-61-3

Publisher : Madhya Pradesh Hindi Granth Academy
Ravindranath Thakur Marg
Bhopal - 462 003 (M.P.)
Phone : 0755-2553084

Edition : First, 2022

Price : ₹ 70 (Only Seventy)

Composing: Akshar Graphics, New Market, Bhopal

Printer : Khare Printers, 64, Durga Chowk Talliya, Bhopal

हिन्दी
साधन का उपयोग
का अंकुरण का
हैं। यदि यह आ
व्याकरणात्मक
की अधिष्ठात्री
तकनीक के विर
मानना है कि वि
दबाव है। मातृ
का अनावश्यक

मध्यप्र
उदाहरण है। ची
उसके माध्यम से
के सभी राज्यों में
से, ग्रन्थों के लेख
प्रवर्तित योजना
शिक्षा ग्रहण कर
करा रही है। हि
मान्यता है कि
रहनी चाहिए।

मध्यप्र
के क्षेत्र में माध्य
विश्वविद्यालयी
बैठने वाले हिन्द
मेरी अ
कार्य में प्रदेश के
इनके उपयोग के
साथी बनाकर